सशक्तिकरण की दिशा में विकसित कृषि संकल्प अभियान

शुभ्रांशु सिंह, पुष्पेन्द्र यादव, रोहन सेरावत और **सुनील कुमार तिवारी**

"विकसित कृषि संकल्प अभियान (खरीफ) सरकार एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप) द्वारा प्रारंभ की गई एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य किसानों को आधुनिक तकनीकों, वैज्ञानिक पद्धतियों तथा नवीन कृषि योजनाओं से जोड़ना है। 29 मई से 12 जून 2025 तक आयोजित इस अभियान में देशभर के कृषि विज्ञान केंद्रों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। इसके अंतर्गत किसानों को मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जल संरक्षण, जैविक खेती, कृषि यंत्रीकरण एवं फसल विविधीकरण से संबंधित जानकारी प्रदान की गई। महिला किसानों तथा युवाओं की सहभागिता पर विशेष जोर दिया गया। यह अभियान किसानों में वैज्ञानिक सोच, आत्मनिर्भरता एवं टिकाऊ कृषि की अवधारणा को सुदृढ़ करता है, जो विकसित भारत-2047 के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।"

अभियान की उपलब्धियां

'विकसित कृषि संकल्प अभियान (खरीफ)' केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि किसानों की सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में एक व्यापक जनआंदोलन के रूप में उभरा। इस अभियान के माध्यम से देशभर में किसानों द्वारा अपनाई गई नवीन तकनीकों तथा नए कृषि-आधारित उद्यमों को वैज्ञानिकों के सहयोग से अन्य किसानों तक प्रभावी रूप से पहुंचाया गया। इससे किसानों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ तथा मृदा स्वास्थ्य और प्राकृतिक खेती के महत्व को पुनः सुदृढ़ किया गया। इसके साथ ही, कृषि विज्ञान केंद्रों की भूमिका ग्रामीण विकास के प्रमुख केंद्रों के रूप में और अधिक सशक्त हुई। महिला किसानों की सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई तथा कृषि विविधीकरण को बढ़ावा देने की दिशा में ठोस एवं व्यावहारिक कदम उठाए गए।

भारतीय कृषि न केवल खाद्यान्न सुरक्षा का आधार है, बल्कि ग्रामीण आजीविका, पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक संतुलन को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे में कृषि क्षेत्र में समय-समय पर नवाचारों को प्रोत्साहित करना, नवीन तकनीकों का व्यापक प्रचार-प्रसार करना तथा किसानों को नवीन योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करवाना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सरकार द्वारा 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का शुभारंभ किया गया। यह अभियान किसानों को कृषि क्षेत्र में हो रहे आधुनिक परिवर्तनों से जोड़ने, उन्हें नई कृषि योजनाओं से अवगत करवाने तथा आधुनिक एवं सतत खेती की दिशा में प्रेरित करने के लिए संचालित किया गया। इस अभियान का प्रमुख लक्ष्य किसानों में आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करना तथा वैज्ञानिक पद्धतियों पर आधारित कृषि को बढ़ावा देना है।

'विकसित कृषि संकल्प अभियान' की परिकल्पना भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप) के सहयोग से की गई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य किसानों को कृषि

कृषि विस्तार प्रभाग, भाकृअनुप-कृषि अनुसंधान भवन-I, पूसा नई दिल्ली-110012

अभियान में ग्रामीण महिलाओं की बड़ी भागीदारी

ग्रामीण सशक्तिकरण से कृषि का सुदृढ़ विकास

विकसित कृषि, समृद्ध किसान

क्षेत्र में हो रहे वैज्ञानिक नवाचारों से जोड़ना, कृषि उत्पादन में वृद्धि करना तथा खेती को अधिक लाभकारी और टिकाऊ बनाना था। इस अभियान के अंतर्गत किसानों को नवीनतम कृषि प्रौद्योगिकियों, उच्च उत्पादक किस्मों के बीज, जैविक खाद, सूक्ष्म पोषक तत्वों, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जल संरक्षण, प्राकृतिक खेती एवं कृषि यंत्रीकरण जैसी महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारी प्रदान की गई।

साथ ही, किसानों को यह भी अवगत करवाया गया कि वे किस प्रकार कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं तथा जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों का वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक तरीकों से प्रभावी ढंग से सामना कर सकते हैं।

अभियान का संचालन और संरचना

इस अभियान का संचालन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि प्रसार विभाग द्वारा किया गया। इसके सफल क्रियान्वयन हेतु देशभर में स्थित 11 कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) तथा 731 कृषि विज्ञान केंद्रों ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। इस अभियान के दौरान देशभर में लगभग 700 जिलों में लगभग 1.30 करोड़ किसानों से कृषि वैज्ञानिकों सीधा संपर्क किया।

इस अभियान का संचालन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि प्रसार विभाग द्वारा किया गया। इसके सफल क्रियान्वयन हेतु देशभर में स्थित 11 कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) तथा 731 कृषि विज्ञान केंद्रों ने सक्रिय भूमिका निभाई। अभियान के दौरान देश के लगभग 700 जिलों में लगभग 1.30 करोड़ किसानों से कृषि वैज्ञानिकों ने प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित किया।

प्रत्येक राज्य एवं जिले में कार्यरत कृषि विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी, कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक तथा कृषि विज्ञान केंद्रों के विस्तार विशेषज्ञ इस अभियान से जुड़े। अभियान को गांव-गांव तक प्रभावी रूप से पहुंचाने के लिए एक सुव्यवस्थित कार्य योजना तैयार की गई, जिसके अंतर्गत किसानों को उनके निकटतम कृषि विज्ञान केंद्रों से जोड़ा गया। इसके साथ ही आदिवासी-बहुल क्षेत्रों,

अभियान का प्रभाव और परिणाम

विकसित कृषि संकल्प अभियान ने अल्प समय में व्यापक और सकारात्मक प्रभाव डाला। इस अभियान के माध्यम से देशभर के लाखों किसानों ने वैज्ञानिक खेती के महत्व को समझा तथा अपने खेतों में आधुनिक तकनीकों को अपनाना शुरू किया। कृषि विज्ञान केंद्रों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, जिन किसानों ने इस अभियान के अंतर्गत प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त किया, उनके खेतों में उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में सुधार दर्ज किया गया। इसके अतिरिक्त, अभियान के दौरान विकसित किए गए 'फार्मर-टू-फार्मर मॉडल' के अंतर्गत प्रगतिशील एवं सफल किसानों को प्रेरक के रूप में चयनित किया गया, जिन्होंने अन्य किसानों को नई तकनीकों एवं नवाचारों का प्रशिक्षण प्रदान किया। इससे कृषि ज्ञान का आदान-प्रदान सशक्त हुआ और तकनीकों का प्रसार तेज गति से संभव हो पाया।

वैज्ञानिक नवाचार से खेती में आत्मनिर्भरता

आकांक्षी जिलों एवं अति पिछड़े इलाकों में रहने वाले किसानों तक विशेष रूप से पहुंच बनाई गई।

खरीफ मौसम को ध्यान में रखते हुए अभियान की अवधि 29 मई से 12 जून 2025 (15 दिवस) निर्धारित की गई। इस दौरान देश के सभी राज्यों में कृषि संबंधी जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण शिविर, प्रक्षेत्र प्रदर्शन, किसान संगोष्ठियां तथा क्षेत्र दौरों का आयोजन किया गया।

वैज्ञानिकों और संस्थाओं की भूमिका

इस अभियान की सफलता में कृषि वैज्ञानिकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। इन्होंने न केवल किसानों को तकनीकी ज्ञान प्रदान किया, बल्कि व्यावहारिक प्रदर्शनों के माध्यम से यह भी प्रदर्शित किया कि आधुनिक एवं वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाकर खेती को किस प्रकार अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है। कृषि विश्वविद्यालयों एवं विभिन्न अनुसंधान संस्थानों ने भी अभियान के दौरान किसानों को फसल चयन, बीज उपचार, सिंचाई प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण तथा फसलोत्तर प्रबंधन से संबंधित वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवाई। इससे किसानों में वैज्ञानिक सोच विकसित हुई और तकनीकों को अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ी।

आधुनिक तकनीक की ओर निरंतर बढ़ते कदम

प्रमुख गतिविधियां

- **किसानों से संवाद एवं जागरूकता कार्यक्रम:** अभियान के अंतर्गत विभिन्न गांवों में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किसानों के साथ प्रत्यक्ष संवाद किया गया। इस दौरान उन्हें नवीन कृषि योजनाओं, आधुनिक तकनीकों, उन्नत बीज किस्मों तथा जैविक खेती के महत्व से अवगत करवाया गया।
- **मृदा परीक्षण एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण:** किसानों को अपने खेतों की मृदा की जांच करवाने के लिए प्रेरित किया गया। इससे उन्हें यह जानकारी प्राप्त हो सके कि उनकी मृदा में किन पोषक तत्वों की कमी या अधिकता है। इसके आधार पर संतुलित उर्वरक प्रबंधन को अपनाने पर बल दिया गया।
- **आधुनिक कृषि यंत्रों एवं तकनीकों का प्रदर्शन:** अभियान के दौरान विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों पर आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें ड्रिप सिंचाई प्रणाली, लेजर लैंड लेवलर, मल्चिंग मशीन, सीडड्रिल आदि प्रमुख रहे। इससे किसानों को यांत्रिकीकरण के लाभों से परिचित करवाया गया।
- **कृषि की विविध शाखाओं का समावेश:** अभियान में केवल फसल उत्पादन ही नहीं, बल्कि पशुपालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, कुक्कुट पालन, शूकर पालन, बत्तख पालन, पॉलीहाउस, ग्रीनहाउस, नेटहाउस तथा मशरूम उत्पादन जैसी सहायक कृषि गतिविधियों को भी सम्मिलित किया गया, ताकि किसानों की आय के विविध स्रोत विकसित किए जा सकें।
- **प्राकृतिक एवं जैविक खेती पर विशेष जोर:** अभियान के दौरान किसानों को बताया गया कि रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मृदा स्वास्थ्य प्रभावित होता है। इसलिए जैविक खाद, वर्मीकम्पोस्ट, नीम आधारित कीटनाशक तथा गोबर खाद के उपयोग को प्रोत्साहित किया गया।
- **महिला किसानों एवं युवाओं की भागीदारी:** इस अभियान का एक महत्वपूर्ण पहलू महिला किसानों और ग्रामीण युवाओं की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करना रहा। कृषि को रोजगारोन्मुख क्षेत्र के रूप में विकसित करने हेतु युवाओं को 'एग्रीकल्चर स्टार्टअप' की दिशा में प्रेरित किया गया।

खरीफ मौसम पर विशेष ध्यान

अभियान के दौरान खरीफ मौसम को विशेष प्राथमिकता दी गई। इस अवधि में धान, मक्का, बाजरा, सोयाबीन, मूंग, उड़द जैसी प्रमुख फसलों की बुआई की जाती है। किसानों को इन फसलों की उन्नत किस्मों, समय पर बुआई, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, उचित सिंचाई तकनीकों तथा रोग-कीट नियंत्रण के आधुनिक उपायों की जानकारी दी गई। इससे किसानों को खरीफ फसलों के उत्पादन और उत्पादकता में सुधार के लिए वैज्ञानिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'विकसित कृषि संकल्प अभियान (खरीफ)' ने भारतीय कृषि को नई दिशा और नई ऊर्जा प्रदान की है। इस अभियान ने किसानों में यह विश्वास उत्पन्न किया कि कृषि केवल एक परंपरागत पेशा नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सोच और आधुनिक तकनीकों के समन्वय से एक उन्नत, टिकाऊ एवं लाभकारी व्यवसाय के रूप में विकसित हो सकती है।

इस अभियान की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि इसने किसानों को आत्मनिर्भर बनने, अपनी भूमि एवं पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरूक होने तथा कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करने की दिशा में प्रेरित किया। यह पहल न केवल कृषि क्षेत्र के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि 'विकसित भारत-2047' के लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में भी एक सशक्त और ठोस कदम सिद्ध हुई है।